प्रश्न → छायावाद का हिंदी साहित्य में विशिष्ट महत्व
अथवा → छायावाद की प्रवृत्तियों को लिखें (विशेषताएँ) 5

उत्तर → आधुनिक काव्य चेतना का इतिहास 1850 ई० से माना जा सकता है। आधुनिक काल में भारतेन्दु युग द्विवेदी युग के बाद अभ्युदय-युग आया। सन 1920 ई० से 1936 तक छायावाद की काल सीमा मानी जा सकती है।

छायावाद प्रथम विश्वयुद्ध के समय से प्रारम्भ हुआ। प्रसाद का 'कानन कुसुम' और 'झरना' तथा निराला की 'जूही की कली' (1916) के अतिरिक्त पन्त की पल्लव की रचनाएँ 1920 के आसपास रची जा चुकी थी। इसी समय से हिन्दी कविता में नया मोड़ परिलक्षित होता है। सन 1935 में छायावादी चेतना की सर्वाधिक प्रमुख कृति 'कामायनी' प्रकाशित हुई।

छायावाद बीसवीं शताब्दी के दो दशकों की भारतीय सांस्कृतिक चेतना, राष्ट्रीय चेतना और पुनरुत्थान की कांक्षा क्रमिक परिणति है। सामन्ती व्यवस्था का विघटन तो हो रहा था पूँजीवादी व्यवस्था जड़े जमा रही थी। पूँजीवादी व्यवस्था में अधिकार और वैयक्तिक भावना का अतिरेक मिलता है इस तरह मध्यवर्ग प्रबल होने लगा। छायावाद में मध्यवर्ग की स्वच्छन्द प्रवृत्तियाँ दृष्टिगत होती है। छायावाद में स्वच्छन्दतावादी विद्रोह का महत्व है।

छायावाद के ~~प्रमुख~~ प्रसाद, पन्त, निराला एवं महादेवी चार प्रमुख स्तम्भ है। अन्य कवियों में डॉ० रामकुमार वर्मा, जनार्दन ~~पहले~~ ~~कुछ~~ 'पद्मोद्विग्न' हरिवंशराय बच्चन आदि प्रमुख है।

छायावाद युग की सर्वप्रमुख कृति है 'कामायनी' और जयशंकर 'प्रसाद' है युग के प्रवर्तक 'प्रसाद' न होकर मैथिलीशरण गुप्त और मुकुटधर पाण्डेय है। लेकिन भूषण जी का मत गमक है गुप्त से बहुत पहले 'प्रसाद' ने 'इन्दु' में अनेक छायावादी कविताएँ लिखि थी। सुमित्रानन्दन पन्त ने लिखा है प्रसाद जी को हम हिन्दी में छायावाद का जनक मानते है।

छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ — (1) वैयक्तिकता — वैयक्तिकता छायावाद की प्रमुख प्रवृति में से एक है। द्विवेदी युगीन काव्य में वस्तुपरकता एवं इतिवृत्तात्मकता की प्रधानता थी। वहाँ काव्य में विषय प्रधान था। छायावाद में विषय गौण हो गया विषयी प्रधान हो गया। (विषयीगता प्रधान है।)

छायावादी कवि प्रकृति के वर्णन में प्रवृत्त न हो ... अधिक ~~स्वच्छ~~ प्रवृत्त प्रतीत होते है।
... कवियों में अधिक ...

...वियों की वैदिकता को प्रसाद के आनन्दवाद, निराला के अद्वैतवाद, पन्त की आत्मरति और महादेवी की परोक्षरति के रूप में देखा जा सकता है। छायावाद में नारी की महत्ता प्रतिष्ठित हुई। इसमें गाँधीवाद का योगदान है। इसमें कोई संदेह नहीं कि राष्ट्रीय भावना, सांस्कृतिक रुचि, दार्शनिक पीठिका, गाँधी दर्शन आदि ऐसे तत्व हैं जिन्होंने इसे पूर्णत: अहंवादी और कुंठाग्रस्त काव्य होने से बचा लिया है।

(2) <u>प्रकृति के प्रति नूतन दृष्टिकोण</u> — छायावादी कवि सामाजिक विसंगतियों से ऊबकर प्रकृति के सौन्दर्य बोध की ओर उन्मुख हुए। उन्होंने अपने हृदय का प्रसार सम्पूर्ण दृश्य जगत के साथ किया। प्रकृति-चित्रण में मानवीकरण (Personification) इस युग की प्रमुख विशेषता है। छायावादियों ने प्रकृति को निर्जीव, निश्चेष्ट पृष्ठाधार न मानकर उसे चेतन सत्ता के रूप में स्वीकार किया। प्रकृति पर सर्वत्र मानव-व्यक्तित्व का आरोपण किया गया है। इन कवियों का प्रकृति के प्रति विशेष रुझान रहा है। प्रतीकों, उपमानों, और सौन्दर्य-निरूपण के लिए उन्होंने प्रकृति को माध्यम बनाया है।

(3) <u>विद्रोह</u> — कलात्मक स्वतंत्रता के लिए छायावादी कवियों ने काव्य रूढ़ियों और नैतिक मर्यादावाद के बन्धन तोड़ दे। काव्य को वास्तविक रूप में उनलोगों ने पहचानना चाहा। छायावादी काव्य स्थूल का विरोधी और सूक्ष्म का सहायक है। सूक्ष्म का साधक यह काव्य इसलिए बना कि वह जीवन की वास्तविक अनुभूतियों और स्पन्दनों को अंकित कर सके। नीति और मर्यादा से परे जीवन का अंकन हो रहा था। इस विद्रोह को 'जूही की कली' शीर्षक कविता में देखा जा सकता है जिसमें निराला ने द्विवेदी युग की बाह्य नैतिकता एवं जड़ता को ललकारा है।

(4) <u>विषाद और निराशा</u> — छायावादी काव्य में जो निराशा और करुण के स्वर मिलते हैं उनमें विश्वयुद्ध की विभीषिका का कोई प्रभाव नहीं है। देश में समय-समय पर होने वाले आन्दोलनों की असफलता ने इस काव्य को अवश्य प्रभावित किया है। व्यक्तिवादी जीवन दृष्टि नैतिक एवं सामाजिक मान्यताओं से संघर्ष करती हुई जिस विवशता का अनुभव करती है, वह निराशा और वेदना को जन्म देती है। इन निराशावादी स्वरों को वैयक्तिक जीवन की असफलताओं ने उत्प्रेरित किया है। महादेवी के काव्य में पीड़ा की मुखर अभिव्यक्ति है। बौद्ध दर्शन के दुःखवाद ने कवयित्री को और भी प्रभावित किया है। निराला और पन्त की कविताओं में प्रणय-जनित पीड़ा के स्थान पर सामाजिक परिवे...

Scanned with CamScanner

जागरण कविताओं में अभिव्यक्ति पाती है, जो दूसरे स 'सरोज स्मृति' जैसी कविताओं के कारण हुई है। जीवन संघर्षों से टकराती परम्परा से विमुख होकर जीवन असफलताओं से निराशा होकर छायावादी कवियों ने पलायन प्रवृत्ति को प्रश्रय दिया है। प्रसाद की 'मेरे नाविक' कविता में इसे देखा जा सकता है। यह पलायन कभी प्रकृति क्षेत्र में हुआ कभी दर्शन में, कभी रहस्यात्मक क्षेत्र में।

(5) राष्ट्रीयता एवं मानवतावाद — राष्ट्रीयता एवं मानवता से छायावाद का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। राष्ट्रीय आन्दोलन के गगन में असफलता और निराशा के बादल छाये रहे तो भी यह आन्दोलन गतिमान रहा। इस उत्थान पतन की अंकित छाया साहित्य पर भी पड़ी। महायुद्ध के बाद समग्र मानव दृष्टि में परिवर्तन आया। पन्त की मानवतावादी कल्पना में मार्क्सवादी धर्म निरपेक्ष समाजवाद का प्रमुख योग है। दो विश्वयुद्धों के बीच जो छायावादी काव्य निर्मित हुआ उसमें किसी सीमा तक धर्म निरपेक्ष मानववादी स्वर है। प्रसाद की मानववादी दृष्टि में भारतीय दर्शन और संस्कृति की रेखाएं प्रधान हैं जबकि निराला के काव्य में सर्व वर्ग के प्रति संवेदनशील ममता की गंगा प्रवाहित है। 'भिक्षुक' और 'तोड़ती पत्थर' में यह स्पष्ट दिखलाई पड़ता है।

(6) सौन्दर्य-चेतना — छायावाद की सौन्दर्य-चेतना व्यक्तिवाद की स्वच्छन्द प्रवृत्तियों पर आधारित है जिसमें सौन्दर्य प्रेम की पीठिका पर निर्भर करता है। छायावादी काव्य का सौन्दर्य प्रेमी की दृष्टि में उदित है। निराला की सौन्दर्य चेतना में पौरुष की प्रधानता है और उनमें निःशंकता प्राप्त होती है। निराला का सौन्दर्य मूलक काव्य संवेदनात्मक है तो पंत का संवेगात्मक। संवेगात्मक काव्य सीधे हमारे संवेगों पर चोट करता है। प्रसाद की वैचित्र्य कल्पना में साधारण ऐन्द्रियता भी मिल जाती है। महादेवी का सौन्दर्य अनुकरण के कारण कहीं-कहीं अतिरंजित है। सौन्दर्य भावना के अन्तर्गत ही प्रेम, वेदना आदि की भावनाएं आ जाती हैं जिनका परिचालन सौन्दर्य भावना करती है।

(7) कल्पना की अतिशयता — जिज्ञासा और कुतूहल स्वतः छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं। छायावादियों के कल्पना के स्वर्णलोक में ही उनकी शुद्ध दृष्टि संभव हुई। कल्पना का अतिरेक आत्मिक भावना के क्षेत्र में एक प्रकार की पलायन वृत्ति ही है ...
यथार्थ जगत से दूर कवि एक नये भावलोक का निर्माण करता ...
की आशाएँ, आकांक्षाएं जब अपनी व्यक्तिवादी ...

दुखी जन के स्वप्न की कल्पना के हृदयस्पर्शी लोक की ओर मुड़ती है। इसलिए छायावादी कवियों ने प्रकृति के विभिन्न रूपों में ही अपने को पाने का प्रयास किया है। ये कवि यथार्थ जीवन से असन्तुष्ट ही रहे।

8) चिन्तन दर्शन — छायावादी कवियों ने रहस्य और अध्यात्म की दार्शनिक भूमि पर प्राण और जीवन की नाना समस्याओं को प्रकट किया है। इन कवियों ने विभिन्न चिन्तन धाराओं का समाहार कर अपनी एक व्यावहारिक आधार भूमि देने का प्रयास किया है। यथार्थ का आग्रह कम है उन्हें आत्मिक सफलता ही प्राप्त लगी है। इन दार्शनिक धाराओं ने किसी सीमा तक भावुकता को अनुशासित किया है।

दार्शनिक दृष्टि से निराला पर वेदान्त और रामकृष्ण मिशन का प्रभाव पड़ा है प्रसाद की प्रेम कल्पना में सूफी भावना का योग है और उन पर सबसे अधिक प्रभाव दर्शन के समरसता-सिद्धान्त और आनन्दवादी जीवन-दृष्टि का है। बौद्धों की करुणा से भी उनका काव्य आँचल भीगा है किन्तु इसका सर्वाधिक प्रभाव महादेवी पर पड़ा, जिनके रहस्यवाद में संतों की वाणी का भी स्वर है। पंत की 'युगान्त' और 'ग्राम्या' पर भौतिकवाद का प्रभाव है। पंत मार्क्सवाद से भी प्रभावित हुये हैं और अन्त में अरविन्द दर्शन की ओर मुड़े। अरविन्द दर्शन एक समन्वयवादी दर्शन है। जिसका आदर्श भौतिकवाद तथा अध्यात्मवाद का समन्वय है यही समन्वयवादी भावना पन्त के 'स्वर्णकिरण' में है।

9) अभिव्यंजना — नया भाव बोध नये शिल्प की माँग करता है। छायावादी कवियों ने नये भावजगत के अनुकूल व्यापक शिल्प चुना। उन्होंने भाषा को साहित्यिक अभिव्यक्ति का एकमात्र साधन मानते हुए भाव और भाषा के प्रति सामंजस्य को अनिवार्य माना है। भाषा के प्रति उनका दृष्टिकोण व्याकरण निरुद्ध न होकर स्वच्छन्द और रोमानी। खड़ी बोली को उन्होंने ब्रजभाषा के समान सरस और कोमल कान्त पदावली से युक्त किया, संकेत और प्रतीक बहुल होने से इनकी काव्य भाषा में लाक्षणिकता और व्यंजनात्मकता अधिक है। प्रतीक योजना में रागात्मकता तो है ही, साथ ही सूक्ष्म अनुभूतियों को अंकित करने का प्रयास की है। भाषा के क्षेत्र में जो व्यंजना द्विवेदी काल के काव्य में मिलती है यही छायावाद में भी है। छायावादियों में भाषा का प्रयोग है स्वच्छन्दात्मकता काव्य रचना के लिए आवश्यक मानी जाती है। इनकी भाषा में भावानुकूलता है